नहीं है। अवकाश की गहराई व हलकी छटाओं के अंकन के कौशल में वे बेजोड़ थे। चित्रण की क्रियाविधियों का उनको सम्पूर्ण ज्ञान था व डच तैल चित्र अभी भी उत्कृष्ट अवस्था में हैं।

यूरोप के अन्य देशों के कलाकारों के समान विशेष अध्ययन के लिए इटली जाने की प्रथा डच कलाकारों में नहीं थी व बहुत ही कम कलाकार इटली हो कर आये थे। इटली रह कर आये कलाकारों में यूट्रेक्ट शहर के कुछ कलाकार थे जो सत्रहवीं सदी के आरम्भ में इटली गये थे। वे कारावाद्ज्यो से प्रभावित थे व उन्हीं का अनुसरण करके इन कलाकारों ने कलानिर्मिति की जो **यूट्रेक्ट शैली** के नाम से ज्ञात है। इनमें से **हैन्ड्रिक टर्ब्रूगेन** (1585-1629) व गेरार्ड वान **हान्थार्स्ट** (1590-1656) विशेष प्रसिद्ध हैं। कारावाद्ज्यो के चित्र 'संत मॅथ्यू को आह्वान' का अनुसरण करके टर्ब्रूगेन ने उसी विषय पर एक चित्र बनाया जिसने डच चित्रकारों को काफी प्रभावित किया।

जनसाधारण की कला होने के कारण यह स्वाभाविक था कि डच कला का आरम्भ व्यक्ति चित्रण से हो। आरम्भ में बहुसंख्य कलाकार व्यक्ति चित्रकार ही थे जिनको सम्पन्न व्यक्तियों व व्यापारियों से व्यक्ति चित्रण का कार्य मिलता था। कई व्यापारी नगर सुरक्षा दल के सदस्य हुआ करते थे व उनको दल के सदस्यों का सामूहिक रूप से व्यक्ति चित्र बनवाने का शौक था। इसके परिणामस्वरूप डच कला में सामूहिक व्यक्तिचित्रण का भी प्रचलन बढ़ता गया। विभिन्न निगमों के अधिकारी भी सामूहिक व्यक्ति चित्रों के शौकीन थे। हालैण्ड के व्यक्ति चित्रकारों में से **फ्रान्स हाल्स (1580-1666)** ने विश्व ख्याति प्राप्त की। उन्होंने व्यक्ति चित्रण के अलावा अन्य विषयों के चित्र नहीं बनाये। तत्कालीन रिवाज के अनुसार उनके चित्रित सभी व्यक्ति काले वस्त्र व सफेद कालर पहने हुए हैं। वे अक्सर कुलीन वर्ग के व्यवसायी नगरवासी हुआ करते थे। ऐसे समान पोशाक पहने हुए व्यक्तियों के चित्र बनाना नीरस काम था। उसमें कोई स्फूर्तिदायक बात नहीं थी। किन्तु हाल्स ने अपने अंकन कौशल से ऐसे सामान्य विषय के चित्रों में ऐसी जान डाली है कि दर्शक मुग्ध होता है। हाल्स के चित्रों में भौतिक सौन्दर्य का मनोहर विलास है; उन्होंने कहीं भी आलंकारिता या कल्पना का सहारा नहीं लिया है। असामान्य अंकन कौशल उनकी कला का सर्वोपरि गुण था व उन्होंने तूलिका के न्यूनतम किन्तु संवेदनशील प्रयोग से आदमियों के सजीव व उत्साह से भरे हुए व्यक्ति चित्र बनाये। वे बहुत कम रंगों का प्रयोग करते थे किन्तु उनके नगर सुरक्षा दलों के प्रीतिभोज के चित्रों में रंगों की चमक-दमक भी है। उनके आरम्भिक व्यक्ति चित्र सोच-समझ कर सच्चाई की ओर विशेष ध्यान देकर बनाये गये हैं, किन्तु वे कुछ कठोर प्रतीत होते हैं। अभ्यास के साथ उनकी अंकन पद्धति में निर्भीकता व स्वाभाविकता के गुण सम्मिलित हुए व व्यक्तिचित्र सजीव दिखायी देने लगे। हाल्स के चित्रों का सबसे बड़ा दोष यह है कि उनमें केवल सतही सौन्दर्य की ओर ध्यान दिया गया है व चित्र विषय के मनोवैज्ञानिक व्यक्तित्व की आन्तरिक गुण-विशेषताओं का उसमें दर्शन नहीं है। उनकी प्रतिभा की एक और विशेषता यह थी कि उन्होंने सामूहिक व्यक्ति चित्रों में चित्र के विभिन्न अंगों को योजनापूर्वक स्थापित करके उनमें सुसंवादित्व का निर्माण किया है। उनके विश्व प्रसिद्ध चित्रों में 'हंसने वाला घुड़सवार', 'योंकर राम्प और उसकी प्रेयसी', 'हार्लेम के

Scanned with CamScanner

वृद्धाश्रम की महिला प्रशासक' प्रमुख हैं (चित्र 11)। व्यक्ति चित्रों के अलावा, डच चित्रकारों ने नगरवासियों और देहातियों के फुरसत के क्षणों के यथार्थवादी दृश्य चित्र भी बनाये। देहाती लोगों के दैनंदिन जीवन को चित्रित करने में **एड्रियन वान ओस्टाड** (1610-1685) माहिर थे व उनके चित्र 'हाथापाई', 'बेला-वादक' व 'शिक्षक' उनकी निपुणता की परिचायक प्रसिद्ध कृतियाँ हैं। समाज के उच्च स्तर के लोगों के जीवन को चित्रित करने में रुचि रखने वाले कलाकारों ने अधिकतर ऐसे प्रसंगों को चुना है जिनमें महिलाएँ अपने दैनन्दिन काम में या वाद्य संगीत में मग्न हों या भद्र पुरुष मिलकर मद्य सेवन कर रहे हों। इन्होंने ऐसे प्रसंगों को भी चित्रित किया है जिनमें परिवार के सदस्यों को त्योहार मनाते हुए या हर्षोल्लास के साथ फुरसत के क्षणों को बिताते हुए दिखाया है। इन कलाकारों में से **गाब्रिएल मेटसु** (1630-67) की 'संगीत का पाठ', 'संगीत प्रेमी', 'शिकारी की भेंट', व **यान स्टेन** (1626-79) की 'संत निकोलस की पूर्व संध्या', (चित्र 13) 'प्रेम विह्वल नौकरानी' ये कृतियाँ उनकी कला की व्यक्तिगत विशेषताओं पर प्रकाश डालती हैं। उपर्युक्त चित्रकारों से भी, घरेलू विषयों के चित्रण में, **गेरार्ड टर्बार्ख** (1617-81) व **पीटर डे होख** (1629-84) ने विशेष दर्जे का स्थान प्राप्त किया। धूसर एवं गहरे रंगों की सूक्ष्म छटाओं का समुचित अंकन करके कमरे के अंधेरे हिस्से में हलकी रोशनी का प्रभाव दिखाने में एवं व्यक्तियों व वस्तुओं का सही जगह स्थापन करके, सौम्य प्रकाश के अन्तर्गत दृश्य का संयोजन करने में टर्बार्ख निपुण थे। उनके प्रतिनिधि चित्रों में, 'रमणी-भक्त', 'संगीत', 'पिसनहारे का परिवार' ये कृतियाँ हैं। रेशमी कपड़े की चमक कुशलता से यथार्थ अंकित करने में टर्बार्ख बेजोड़ थे।

घरेलू विषयों के अन्य डच चित्रकारों व पीटर डे होख में प्रमुख अन्तर यह है कि होख ने पृष्ठभूमि को उतना ही महत्त्व दिया जितना कि आदमियों को। गृहांतर्भाग का दृश्य हो या आंगन का वे अपना ध्यान छाया-प्रकाश में हो रहे सूक्ष्म परिवर्तन को अंकित करने पर केन्द्रित करते थे। इसी वजह से, उनके 'युवा माता', 'ताश के खिलाड़ी', 'डच गृहांतर्भाग' जैसे घर के भीतरी दृश्यों के चित्रों में कमरे का खिड़की दरवाजों के समीप का प्रकाशित हिस्सा और अन्दर का कम प्रकाशित हिस्सा इनमें छटाओं का तीव्र विरोध युक्त प्रयोग है जबकि 'डच गृह का आंगन' जैसे आंगन के अनेक चित्रों में हालैण्ड के वातावरण के सौम्य प्रकाश का प्रभाव हलके विरोधयुक्त छटाओं के प्रयोग से दिखाया है। रेम्ब्रांट या कारावाद्ज्यो के समान उन्होंने छाया-प्रकाश में तीव्र विरोध का प्रयोग नहीं किया बल्कि विषय वस्तुओं के नैसर्गिक रंगों की रक्षा करने पर ध्यान दिया; इसी वजह से उनके चित्रों में उत्कृष्ट रंग सौन्दर्य है। वर्मेर के समान उनके गृहान्तर्भागों के दृश्यों का वातावरण रमणीय व प्रशान्त प्रकाश से परिपूर्ण होता है व उन्होंने ज्यामितीय पद्धति के संयोजन द्वारा पूरे दृश्य को एकत्व प्रदान किया है फिर भी विवरण, बारीकियाँ व मानव भावनाओं पर भी बल देने से होख के चित्र अधिक यथार्थ व कथनात्मक बन गये हैं। उन्होंने कई दृश्यों के बीच में खुले दरवाजों को चित्रित किया है जिससे घरेलू वातावरण में अधिक घनिष्ठता प्रतीत होती है और चित्रकार को भी अवकाश की गहराई व प्रकाश में हो रहे सूक्ष्म परिवर्तन को कुशलता से अंकित करने का सुअवसर प्राप्त हो गया है। चित्र में वर्णनात्मक सामर्थ्य का होख द्वारा पूरा ख्याल

Scanned with CamScanner